Poems

Poet: *BK Mukesh*

प्राकृतिक आपदाऐ

अपनी मर्यादा में रहना है प्रकृति का विधान
ऐसी मर्यादायें हमें सिखाते ख़ुद शिव भगवान

अपने सुख के लिए प्रकृति को नहीं सताओ
प्रकृति के नियमानुसार जीवन को चलाओ

प्रकृति का नियम होता लक्ष्मण रेखा समान
उल्लंघन करके बन जाओगे दुखों के गुलाम

दोहन करके प्रकृति का किया उसे कंगाल
इसीलिए प्रकृति को क्रोध आया विकराल

फैलाई तबाही वर्षा जल को बाढ़ बनाकर
अपने साथ कितने जीवन ले गई बहाकर

पेड़ काट काटकर भौतिक साधन जुटाया
हरीभरी धरती को मानव ने बंजर बनाया

अति वृष्टि का जल उमड़ घुमड़कर आया
इसका तीव्र वेग कोई सहन कर न पाया

इस प्रकोप का दुख अब किसलिए मनाते

इस समस्या को किसलिए नहीं सुलझाते

धरती की बंजरता को जड़ से तुम मिटाओ
अपने चारों तरफ हरे भरे तुम पेड़ लगाओ

प्रकृति का वंदन करो करके उसका पालन
प्राकृतिक मर्यादा में करो जीवन का संचालन

इसी विधि से प्रकृति भी मर्यादित हो जाएगी
दुख देना छोड़कर सुखमय जीवन बनाएगी ||

" ॐ शांति "

Source: shivbabas.org/poems **BK Google**: www.bkgoogle.org